

निम्न जेनेरिक पत्र में से कोई एक पत्र संस्कृत से भिन्न विभाग के छात्र पढ़ेंगे  
विद्यालङ्कार (बी०ए० संस्कृत ऑनर्स)  
संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम  
Generic Elective (GE) Course  
सत्र- तृतीय Semester –3

मौलिक-वैकल्पिक-विषय	प्राचीन भारतीय राजनीति	पूर्णाङ्क -100
Generic Elective (GE)	Ancient Indian Polity	सत्रान्त परीक्षा -70
Paper–HSA – G311		आन्तरिक परीक्षा-30
		सकल-अर्जिताधिभार 06
		(Total Credits - 06)

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section-1) प्राचीन भारतीय राजनीति का स्वरूप, उद्भव और क्षेत्र

खण्ड-ख (Section-2) राज्य का स्वरूप और प्रकार

खण्ड-ग (Section -3) राजतन्त्र, मन्त्रीपरिषद् और मन्त्रीमण्डल

खण्ड-ग (Section -4) कानून, न्याय, कर प्रणाली और अंतर्राज्यीय सम्बन्ध

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पत्र का प्रयोजन विद्यार्थियों को संस्कृत साहित्य में विद्यमान राजनीतिक संस्था एवं भारतीय नीतियों से परिचित कराना है। इन नीतियों का प्राचीन संस्कृतवाङ्मय में वैदिक संहिताओं से लेकर धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र की परम्पराओं में प्राप्त होता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संस्कृत ग्रन्थों में प्रदर्शित राजधर्म के स्वरूप को समझने में सफल होंगे।
2. राजनीति के क्षेत्र में उतरने वाले छात्रों के लिए इस साहित्य का अध्ययन एक नई ऊर्जा प्रदान कर सकने में समर्थ हो सकता है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section -1)

प्राचीन भारतीय राजनीति का स्वरूप, उद्भव और क्षेत्र

घटक (Unit-1) राजनीतिविज्ञान का स्वरूप, क्षेत्र और स्रोत –

(क) प्राचीन भारतीय राजनीति का स्वरूप – दण्डनीति, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र

(ख) भारतीय राजनीति का क्षेत्र– धर्म, अर्थ और नीति के साथ सम्बन्ध

(ग) भारतीय राजनीति के स्रोत – वैदिक साहित्य, पुराण, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र, कौटिल्य का अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र

घटक (Unit-2) राज्य का उद्भव : दण्डनीति मत्स्यन्याय सिद्धान्त ( अर्थशास्त्र १.१.३) महाभारत का शान्तिपर्व ६७.१७-२८, मनुस्मृति ७.२० राज्य का दैवीय सिद्धान्त (अर्थशास्त्र १.९, महाभारतशान्तिपर्व ६७, .४३-४८ मनुस्मृति ७.४-७ )

खण्ड-ख (Section -2)

### राज्य का स्वरूप और प्रकार

**घटक (Unit-1) (क)** राज्य के प्रकार : राज्य, स्वराज्य, भोज्य, वैराज्य, महाराज्य, साम्राज्य ( ऐतरेय ब्राह्मण ८.३.१३-१४, ८.४.१५-१६)

**(ख)** बौद्धसाहित्य में लोकतन्त्र (दिग्घनिकाय, महापरिनिब्बानसुत्त, अंगुत्तरनिकाय १.२१३, ४.२५२, २५६)

**घटक (Unit-2) (क)** राज्य की प्रकृति : सप्तांग सिद्धान्त - स्वामी आमात्य, जनपद, पुर, कोष, दण्ड, मित्र ( अर्थशास्त्र ६.१, मनुस्मृति ९.२९४ )

### खण्ड-ग (Section-3)

#### राजतन्त्र, मन्त्रीपरिषद् और मन्त्रीमण्डल

**घटक (Unit-1) (क)** राज्यतंत्र: राजशाही, उत्तराधिकार, राज्याभिषेक, राजा के प्रजा के प्रति कर्तव्य (शुक्रनीति 4.२.१३०, १३७) राजा न्यासी के रूप में (अर्थशास्त्र १०.३ )

**(ख)** नैतिक व्यवस्था के रूप में राजा (महाभारत, शान्तिपर्व १२०.१-३५, मनुस्मृति ७.१-३५ ), मन्त्रीमण्डल: वैदिक युग में रत्नी (मन्त्रीपरिषद्), (शतपथ ब्राह्मण ५.२.५.१ ), कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मन्त्रीमण्डल अर्थशास्त्र (१.४१.५, १.११) एवं शुक्रनीति (२.७०-७२)

**घटक (Unit-2) केन्द्रीयपरिषद् और स्थानीय प्रशासन :**

**(क)** वैदिक साहित्य में केन्द्रीय परिषद् सभा : सभा और समीति (अथर्ववेद ७.१२.१, १२.१.६) तथा विदथ (ऋग्वेद १०.८५.२६), स्थानीय निकाय : रामायण और महाभारत में पौर-जनपद

**(ख)** ग्रामीण समीति : सभा, पंचायत

### खण्ड-घ (Section-4)

#### कानून, न्याय, कर प्रणाली और अंतर्राज्यीय सम्बन्ध

**घटक-क (Unit-1) (क)** कानून के स्रोत के चार प्रकार : (१) धर्म, (२) व्यवहार, (३) चरित्र, (४) राजशासन

**(ख)** कानूनप्रवर्तन के चार प्रकार : (१) जाती के नियम (जातिधर्म) (२) स्थानीयरीतिरिवाज, जनपदधर्म, (३) समूह के उपनियम (श्रेणीधर्म) (४) पारिवारिक रीतिरिवाज (कुलधर्म)

**(ग)** केन्द्रीयपरिषद् और स्थानीय प्रशासन : वैदिक साहित्य में केन्द्रीय परिषद् सभा : सभा और समीति (अथर्ववेद ७.१२.१, १२.१.६) तथा विदथ (ऋग्वेद १०.८५.२६), स्थानीय निकाय : रामायण और महाभारत में पौर-जनपद

**(घ)** ग्रामीण समीति : सभा, पंचायत

**घटक-ख (Unit-2) न्यायिक प्रशासन और न्यायालय: (क)** राजा समस्त न्याय के मूल स्रोत एवं अध्यक्ष के रूप में

**(ख)** मुख्य न्यायाधीश - प्राड्विवाक एवं सभासद के सदस्यों के गुण (शुक्रनीति 4/५/६९-१९६)

दो प्रकार के राजकीय न्यायालय : धर्मस्थीय एवं कंटकशोधनक (अर्थशास्त्र ३/१-२०) ग्रामस्थसामाजिक एवं स्थानीय न्यायालय - कुल, पुग एवं धर्माशन

**घटक-ग (Unit-3) राज्य की कर -नीति – उचित एवं न्यायसंगत कराधान नीति शास्त्रनीत : धर्माशास्त्रानुमत (महाभारत शान्ति पर्व ७१/१०-२५ ), मनु स्मृति ७/१२७, १४४) महाभारत में अनीतिपूर्ण कर प्रणाली की आलोचना (८७/१९-१८-२२, ८८.4-७ ) अर्थशास्त्रानुसार कर के दो स्रोत-अयशरीर और अयमुख ( अल्टेकर ए० एस०, State and Government in Ancient India, pp. 262 267, सहाय शिवस्वरूप, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, pp.456-458 )**

**घटक-घ (Unit-4) राज्य के अन्तर्राज्यीय सम्बन्ध : मण्डल का संक्षिप्त सर्वेक्षण, अंतर्राज्यीय सम्बन्ध का संक्षिप्त सर्वेक्षण, कूटनीति के सिद्धान्त एवं साधन : साम, दाम, दण्ड, भेद, युद्ध एवं शान्ति की कूटनीति, षाड्गुण्य सिद्धान्त: संधि, विग्रह, आसन, संश्रय, द्वैधीभाव ( अल्टेकर, ए.एस. प्राचीन भारत में राज्य एवं प्रशासन, pp २९१-३०८, सत्यकेतु विद्यालङ्कार, प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था एवं राजशास्त्र, pp. ३६३-३६७)**

**सन्दर्भ-ग्रन्थ :**

1. ArtHSAHSAtra of Kautilya— (ed.) Kangale, R.P. Delhi, Motilal Banarasidas 1965
2. Atharvaveda samhita— (Trans.) R.T.H. Griffith, Banaras, 1896-97, rept. (2 Vols) 1968.
3. Mahabharata (7 Vols) — (Eng. Tr.) H.P. SHSAtri, London, 1952-59.
4. Manu's Code of Law— (ed. & trans.) : Olivelle, P. ( A Critical Edition and Translation of the Mānava DharmaŚāstra), OUP, New Delhi, 2006.
5. Ramayana of Valmiki — (Eng. Tr.) H.P. SHSAtri, London, 1952-59. (3 Vols)
6. Rgveda samhita (6 Vols) — (Eng. Tr.) H.H. Wilson, Bangalore Printing &Publishing Co., Bangalore, 1946.
7. Satapatha brahmana— (with Eng. trans. ed.) Jeet Ram Bhatt, Eastern (3 Vols) Book Linkers, Delhi, 20